वैल्हम स्कूल पत्रिका

१९७० हिन्दी विभाग नं० २८

लड़ाई और शान्ति

आज सारे संसार में युद्ध का वातावरण फैला हुआ है। एक देश दूसरे देश पर, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर विश्वास नहीं करता। फल यह हुआ है कि युद्ध की ज्वाला में सारा संसार झुलस रहा है।

लड़ाई का अर्थ है दो पक्षों में एक दूसरे के प्रति विरोध की भावनाएँ। जिनके फलस्वरूप मानव रक्तपात करता है। युद्ध का कारण विज्ञान का दुरुपयोग है। इसलिए कहा भी जाता है कि विज्ञान एक अच्छा दास परन्तु बुरा स्वामी है।

बम आदि से इस पृथ्वी का क्षण भर में विनाश हो सकता है। मशीनों की अधिकता, गरीबी, पूँजीवाद आदि भी लड़ाई के कारण हैं। लड़ाई की भावना को दूर करने के लिए हमें मेल-जोल, अहिंसा व पारस्परिक विश्वास का मार्ग अपनाना होगा।

शान्तिमय जीवन मानव के समस्त सुखों का सार है। शान्ति के लिए आवश्यक है कि देश से गरीबी, धन की असमानता, द्वेष की भावना व जाति-पाति की भावना को दूर किया जाए। एक देश दूसरे देश के प्रति विरोध की भावना करना छोड़ दे। शान्ति को बनाए रखने के लिए भारत ने पंचशील का सन्देश दिया। श्री शुक्लजी ने पंचशील का रहस्य इन शब्दों में व्यक्त किया है :—

शीत युद्ध का या तनाव का,
नहीं चलेगा अब हथकण्डा ॥
मुक्त गगन में लहरायेगा,
प्यारा पंचशील का झण्डा ॥

विनीत गर्ग (२१८)
पी०सी०ई० 'ए'

२

एक पिकनिक

हम लोग एक बार त्रिबेनी पिकनिक मनाने गये थे। वह एक छोटा सा पहाड़ी स्थान है। वहाँ मैं, मेरा बड़ा भाई तथा मम्मी, डैडी गए थे। हम सब गाड़ी में बैठकर गए थे।

उस दिन मौसम बड़ा सुहावना था। ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। एक जंगल में हमने पिकनिक मनाने की जगह ढूँढी। वहाँ एक झरना बह रहा था। पेड़ों के नीचे खूब छाया थी। हमने सब सामान उतारा और हरी-हरी घास पर बैठ गए।

थोड़ी देर बाद मैं और मेरा भाई झरने में तैरे। हम एक-दूसरे पर खूब पानी उछाल रहे थे।

हम लोग वहाँ सारा दिन रहे थे। दोपहर को हम लोग भोजन खाकर लेट गए। मैं एक किताब पढ़ रहा था। फिर उठकर एक गन्ने के खेत में गए। वहाँ गन्ने का रस पिया। वह बहुत मीठा था।

वहाँ से आकर जंगल में घूमने गए। वह बड़ा सुन्दर जंगल था। हमने एक मोर देखा। वहाँ बहुत फूल और तितलियाँ थीं। शाम को हम लोग चले आये। वहाँ बहुत आनन्द आया था।

विनायक सेन (२१६)
एल०आर०ए०

———

वर्षा का एक दिन

एक दिन सूरज की किरणें चमक रही थीं। हम सब स्कूल जाने की तैयारी कर रहे थे। अचानक ही आँधी चलने लगी। आकाश में काले-काले बादल छा गए। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगे और वर्षा शुरू हो गई।

हम स्कूल की ओर चल पड़े। वर्षा के कारण रास्ते में पानी भर गया था। जगह-जगह मोटर गाड़ियाँ तेज वर्षा के कारण फंसी खड़ी थीं। जब हम स्कूल पहुँचे तो मालूम हुआ कि छुट्टी हो गयी है। हम सबको बड़ा आनन्द आया। हमने सोचा अब घूमते हुए चलेंगे। हम गाँव की ओर चले।

वर्षा बहुत तेज हो गई थी। सारे खेत एक बड़ी झील की तरह लग रहे थे। मैदानों में पानी भर गया था। पेड़ों के नीचे गाय, बैल वर्षा से बचने के लिए खड़े हो गए थे। हमें मेढ़कों की टर-टर सुनाई दे रही थी।

धीरे-धीरे वर्षा थम गई। सूरज की किरणें फिर चमकने लगी। आकाश में इन्द्र-धनुष निकल आया था। वह बड़ा सुन्दर लग रहा था।

हम घर की ओर चल पड़े। घर पहुँच कर हमने अपने गीले कपड़े बदले और खेलने लगे।

सचमुच ही मेरा यह वर्षा का दिन बहुत आनन्द से बीता।

अमरजीत (३७३)
यू० आर०ए०

कविता

चाट पकौड़ी अल्लम गल्लम,
ये सब खाना छोड़ेंगे।
मम्मी हमको पैसे दे दो,
हम गुल्लक में जोड़ेंगे।

पैसे लेकर इन्द्रा जी के पास जाएँगे,
इन्द्रा जी उन पैसों की बन्दूकें मंगवाएँगी।
बन्दूकों को लेकर अपने सैनिक लड़ने जाएँगे ।।

अगल में बस्ता, मोड में दस्ता,
चीन का रस्ता मोड़ेंगे।
मम्मी हमको पैसे दे दो,
हम गुल्लक में जोड़ेंगे ।।

अरविन्दकुमार गुप्ता (१०२)
पी०सी०ई० (सी०)

शेर का शिकार

शाम के समय हम दतिया पहुँचे। वहाँ पहुँचकर पिताजी की इच्छा हुई कि शिकार को चला जाये। किस जानवर का शिकार किया जाये, इस विषय में सबकी मति भिन्न-भिन्न थी। अन्त में तय हुआ कि शेर का ही शिकार किया जाये; क्योंकि यह सबसे रोमांचकारी तथा मनोरंजक होगा।

प्रातः होते ही सब सामान तैयार हो गया। करीब सौ हकइया भी पहुंच गये। सबके पास कोई न कोई हथियार था।

मैं और पिताजी तीन मित्रों को लेकर जीप में बैठ गये। कुछ लोग ट्रक में बैठ गये। बाकी सब हमारे साथ पैदल चले। कुछ देर में हम चौपड़ा नामक गाँव में पहुँच गये। यह गाँव जंगल की सीमा पर था।

हकइया जंगल में चले गये। एक उपयुक्त स्थान देखकर उन्होंने हमारे लिए एक मचान बाँध दिया जिस पर हम बैठ गये। वे जंगल के अन्दर शेर की खोज में चल पड़े।

मेरे पिताजी के पास ३७५ मैगनम थी और उनके मित्रों के पास कई राइफल थीं।

जंगल में अपार निस्तब्धता छाई हुई थी। सहसा नीरवता को भंग करती हुई ढोल आदि की ध्वनि आने लगी। हम सतर्क होकर बैठ गये।

सामने से एक अलमस्त और निशंक चाल से शेर चला आ रहा था। हम सबके शरीर में एक रोमांचकारी बिजली सी दौड़ गयी। पिताजी ने सम्भल कर बन्दूक का निशाना लगाया। वह घोड़ा दबाने ही वाले थे कि उनके मित्र ने उनसे कहा कि यह तो शेरनी है। यह सुनते ही पिताजी ने असन्तुष्ट भाव से बन्दूक नीची कर ली।

कुछ समय पश्चात धुंधले क्षितिज पर रात्रि की लम्बी और भूरी छाया में मैंने एक भीमकाय असाधारण आकृति को हिलते हुए देखा। मैंने पिताजी का हाथ दबाकर उधर को इशारा किया। उधर देखते ही पिताजी सतर्क हो गये। उन्होंने बन्दूक सम्भाली। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया था कि एकदम से धाँय-धाँय की ध्वनि से जंगल गूँज गया। मेरे पिताजी और उनके मित्र मचान से कूदकर भागे। मैं भी बिना कुछ सोचे उनके पीछे भागा।

पिताजी ने एक बहुत बड़े शेर का शिकार किया था। मेरे पिताजी और उनके मित्र उत्तेजित होकर जोर-जोर से बातें कर रहे थे। परन्तु मैं मूक दशा में खड़ा उसे निहारता रहा। कितनी भयंकर तथा रौबीली उसकी आकृति थी। कितना असहाय और निरुपाय वह पड़ा था।

विजयराजसिंह (१७४)
पी०सी०ई० (ए)

———

चुटकुला

एक सरदारजी को पंजाब मेल से जाना था। उसने एक कुली से पूछा, "मेल कहाँ है?" कुली ने सोचा कि वह हावड़ा मेल को पूछ रहा है। उसने कहा कि वह सामने खड़ी है। वह जाकर स्लीपर में बैठ गया। सुबह गाड़ी में उसने एक बंगाली से पूछा, "आपको कहाँ जाना है?" उस बंगाली ने कहा कि उसे कलकत्ता जाना है। इस पर सरदारजी ने कहा कि इसका मतलब ये है कि हावड़ा मेल नीचे और पंजाब मेल ऊपर चल रही है।

—गुरमीतसिंह, पी०सी०ई० (ए)

एक महापुरुष का जीवन

महापुरुषों के जीवन मोमबत्ती के समान होते हैं जो स्वयं जलकर औरों को मार्ग दिखाते हैं। इनके जीवन से हमें सत्यवादिता, वीरता तथा गम्भीरता के उदाहरण प्राप्त होते हैं। इनका जीवन महत्त्वपूर्ण भी होता है। यह अत्याचार को समाप्त करने के लिए समय-समय पर जन्म लेते हैं।

सुभाषचन्द्र बोस का जन्म २३ जनवरी १८९७ में कटक में हुआ था। इस महान आत्मा को बचपन से ही देश के लिए प्रेम था। भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए सुभाषचन्द्र ने बहुत प्रयत्न किया। १९३३ में नेताजी कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। उस समय उन्होंने "भारत छोड़ो" का नारा लगाकर ब्रिटिश को भारत छोड़ने के लिए कहा। ब्रिटिश ने इनको जेल में बन्द कर दिया। परन्तु स्वतन्त्र पंछी ने पिंजरे में कब रहना सीखा? वह वेष बदल कर भाग गये। किसी को पता भी नहीं चला। इसके बाद वह गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित हुए।

इस समय द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो चुका था। ऐसे खतरनाक आदमी का बाहर रहना अंग्रेजों के लिए हानिकारक हो सकता था इसलिए अंग्रेजों ने उन्हें उनके घर में बन्द कर दिया। फिर नेताजी जर्मनी चले गये। पर वहाँ भी अंग्रेजों और अमरीकनों का पक्ष बढ़ता जा रहा था। फिर सिंगापुर में उन्होंने 'आजाद हिन्द फौज' का निर्माण किया। यह फौज भारत को आजाद कराने के लिए बनाई गई थी। इसके बाद वह जापान चले गये। कहा जाता है कि रास्ते में वायुयान की मशीनरी खराब हो जाने के कारण उनका वायुयान समुद्र में गिर गया और उनकी मृत्यु हो गयी।

नेताजी अब हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन उनका देश-प्रेम और त्याग हमें सदा रास्ता दिखाता रहेगा।

संजीव जवाहर (६६)
पी०सी०ई० (ए)

———

तीन कलाकार

एक बार एक राजा के तीन कलाकार थे। तीनों कला में बराबर थे। तुम बता नहीं सकते थे कि कौन सबसे अच्छा है।

एक बार राजा ने तीनों की प्रतियोगिता करवाई। तीनों ने एक-एक तस्वीर बनाई। एक ने फूलों की माला बनाई, दूसरे ने एक टोकरी और उसमें सेव बनाये और तीसरे ने एक दरवाजा और उसमें पर्दा बनाया।

जब सबकी तस्वीरें बन गयीं तो तीनों की तस्वीरें महल के बाहर टाँग दी गयीं, और एक न्यायधीश को वहाँ पर न्याय करने के लिए छोड़ दिया कि कलाकारों में सबसे अच्छा कौन है। तीनों तस्वीरें ऐसी लगती थीं जैसे उनमें जान हो।

इतने में वहाँ पर एक मधुमक्खी आकर फूलों पर बैठ गयी। थोड़ी देर में एक गाय की आँखें सेवों पर पड़ी, तो वह वहाँ पर उन्हें खाने के लिए आ गयी। थोड़ी देर के बाद एक दरबारी ने दरवाजा देखा और वह अन्दर जाने की कोशिश करने लगा।

तब न्यायधीश राजा के पास गया और सारी कहानी कह सुनाई। तब राजा ने तीसरे कलाकार को बहुत बड़ा इनाम दिया।

राजीव खुल्लर (४१)
सी०ई० (ए)

चुटकुला

एक औरत ने अपने पति से कहा—'देखिये, आपको अपने पड़ौसी के घर जरूर जाना चाहिए। बेचारे की चौथी पत्नी मरी है।' पति बोला—'हम तो उनके घर जाते ही रहते हैं। कभी उन्हें भी हमारे यहाँ आने का अवसर मिलना चाहिये।'

संजीव जवाहर (६६), पी०सी०ई० (ए)

भीमताल की सैर

सवेरा हुआ, सुबह के सात बज चुके थे। मैंने अपनी माताजी के कमरे में जाकर देखा कि वह अभी तक सो रही थी। मैंने उनको जगाया और एक खुश-खबरी सुनाई कि आज हमको भीमताल जाना है। मेरी माताजी खुशी से फूली न समाई। हम दोनों ने जल्दी से स्नान किया और पूजा पाठ करके पिताजी के कमरे में पहुँचे।

वहाँ जाकर हमने देखा कि पिताजी स्नान करके पूजा पाठ खत्म करके जाने के लिए तैयार हो गये थे। हम लोगों ने मोटर मंगाई और सामान रखा। हम लोग चल पड़े। एक बजे हम लोग महरागाँव पहुँचे। वहाँ जाकर हमने अपने एक रिश्तेदार के घर खाना खाया।

दो बजे हम लोग घोड़खाल पहुँचे। भीमताल दो मील रह गया था। ढ़ाई बजे हम लोग भीमताल पहुंचे। हम लोग अपने मामा के घर गये। माताजी ने मुझे मेरे भाई के साथ भीमताल में मछली पकड़ने भेज दिया। हम दोनों ताल के किनारे पहुंचे हमने जल्दी में आटा लगाया और उसे दूर पानी में फेंक दिया।

दस मिनट के बाद हमारा डोरा बड़ी जोर से खिचा। हमने जल्दी से डोरा पकड़ लिया और धीरे-धीरे खींचने लगे। थोड़ी देर के बाद एक दो किलो की मछली पानी के बाहर निकली। इतने में हमारा नौकर वहाँ पहुंचा और उसने कहा कि जाने का समय हो गया है। हमने घर पहुँच कर खाना खाया। उसके पश्चात हमने अपने मामा को प्रणाम किया और वापिस नैनीताल चल पड़े।

धर्मेन्द्र (२८)
पी०सी०ई० (बी)

———

कविता

मेरा एक दोस्त था
उसका नाम था मोटा
मोटा का एक दोस्त था
उसका नाम था खोटा
खोटा का एक दोस्त था
उसका नाम था छोटा
सबके पास एक दोस्त था
उनके नाम थे मोटा, खोटा, छोटा।

अरविन्द (२६४) सी०ई०ए०

———

चुटकुला

एक बार भारत के प्रसिद्ध वकील आशुतोष चौधरी अदालत में एक मुकदमा करने जा रहे थे। जब वह अदालत पहुँचे तब उनके हाथ में कई कानूनी किताबें थीं। जज ने हँस कर कहा - 'चौधरी साहब, आप तो अपनी कानूनी लाईब्रेरी अपने साथ ले आए?' आशुतोष बोले—'हाँ हुजूर आपको कानून सिखाने के लिए।' जज साहब चुप रह गये।

संजीव जवाहर (६६)
पी०सी०ई० (ए)

———

काज़ का शिकार

मेरे पिता जी, भाई और मैं एक बार काज़ के शिकार के लिये मोरेना गये। हम नरौली से सुबह के आठ बजे चल दिये। हम मोरेना रात के दस बजे पहुँचे। हमने अपने टैन्ट गाड़ कर रात को सोने का प्रबन्ध कर लिया। दूसरे दिन हम सवेरे पाँच बजे काज़ मारने गये।

हम लोग मोरेना से सबेरे साढ़े पाँच बजे चल दिये। हम लोग मोरेना की झील पर गये। वहाँ पर सन्नाटा छाया हुआ था। हमने अपने नौकरों से कहा कि वे झील को घेर कर बैठ जायें। झील को घेर कर हमने बन्दूकें चलाना शुरू किया। मेरे पिता जी और मेरा छोटा भाई जीप पर बैठे थे। मेरे बड़े भाई और मैं झील के एक किनारे पर बैठे थे। जब मेरे भाई ने काज़ पर गोली चलाई तो सब काज़े उड़ने लगीं। सबने उड़ती काज़ों पर गोलियाँ चलाई। उस दिन हमने आठ काज़ें मारी।

दूसरे दिन हम फिर काज़ के शिकार को गये। उस दिन जब हम काज़ मारने जा रहे थे हमें एक आदमी कैम्प के पास मिला और उसने कहा कि एक नाका पास वाली झील में है। मेरे पिता जी जीप से वापिस कैम्प गये और रायफल लाये। एक रायफल मेरे पिता जी के बड़े भाई के पास थी और एक मेरे बड़े भाई के पास।

जब हमने नाके को देखा तब वह धूप में आराम कर रहा था। मेरे पिता जी के बड़े भाई ने तीन सौ बोर से एक गोली चलाई फिर मेरे बड़े भाई ने भी एक गोली चलाई।

उस दिन हम रात के नौ बजे घर पहुँचे। काज़ के शिकार में हमने एक नाका भी मार लिया। इस शिकार से हम बहुत प्रसन्न थे।

माधवेन्द्रसिंह, (२०२) पी०सी०ई०बी०

———

कविता

अजब है पेट का फन्दा।
लाचार है इससे बन्दा।
करवाता घर-घर धन्धा,
आखिर काम है इसका गन्दा।
सुन लो बाबू भैया सेठ,
यह तो पापी है पेट।

अरविन्द निगम (१००) पी०सी०ई०सी०

———

चुटकुले

अध्यापक—(रमेश से) तू कोई काम भी वक्त पर नहीं करता, तूझ सा अनियमत लड़का मैंने नहीं देखा, तू कब जनमा था ?

"सर दो अप्रैल,"

अध्यापक—"वहाँ भी तूने एक दिन की देर कर दी।"

* * *

कमल—"जरा एक सिग्रेट देना।"

मोहन—"मैंने तो सुना था कि तुमने सिग्रेट पीना छोड़ दिया।"

कमल—"मैं त्याग की पहली मंजिल पर हूं, अर्थात खरीदनी छोड़ दी है।"

किशन खन्ना, पी०सो०ई० (ए)

कैम्प

मैं कैम्प बहुत बार गया हूँ। मुझे अभी तक सबसे अच्छा ओखीमठ कैम्प लगा। यह जगह पहाड़ों में है और वहाँ बहुत बर्फ होती है।

हम स्कूल से आठ बजे सुबह चले। पहले दिन तो हम बस से ही चलते गये। रात के दस बजे हम रुद्रप्रयाग पहुँचे। हम वहाँ रात के लिये ठहरे।

दूसरे दिन हम सुबह छः बजे से ले के ग्यारह बजे तक चलते रहे। हम एक जगह पर पहुंचे उस जगह का नाम था 'दुग्गलबेटा'। वहाँ पर एक ही घर था, यह ओखीमठ से आगे था।

हम लोग चलते गये परन्तु कुछ लड़के पीछे रह गये। उनमें से एक मैं था। बहुत मुश्किल से हमने अपना रास्ता ढूँढा।

दूसरे दिन हम तुंगनाथ और चन्द्रशिला पर्वत पर चढ़े। इसमें छः मील चढ़ाई थी। हमें चढ़ने में बहुत कठिनाई होती थी। हम बहुत थक गये थे। पर्वत के पास बर्फ बहुत नरम थी और चलने में कठिनाई होती थी। हमारे अध्यापक ने हमें रुकवाया और हमें वापिस जाने के लिए कहा। हम वापिस लौट गये।

शाम को हम घूमने गये और लकड़ियाँ लाए। दूसरे दिन हम स्कूल लौट गए।

बिनकी चड्डा (६९) सी०ई०ए०

———

चुटकुला

एक बार एक लड़के ने अपने पिताजी से कुछ पैसे माँगे।

'इतना बड़ा होकर पैसे मागता है'— उसके पिताजी ने कहा।

'तो फिर रुपये ही दे दो पिताजी'— उस लड़के ने कहा।

अरविन्द अग्रवाल (७३) पी०सी०ई० (ए)

कठवाली

घर से बस्ता लेकर निकले, स्कूल का रस्ता भूल गये
घर से बस्ता लेकर निकले, स्कूल का रस्ता भूल गये
स्कूल में जाकर हमने क्या देखा ?
स्कूल में जाकर हमने, मास्टर जी को इंगलिश पढ़ाते देखा
हमने इंगलिश तो खूब पढ़ी, पर स्पैलिंग लिखना भूल गये
स्कूल से बस्ता लेकर निकले घर का रस्ता भूल गये
घर में जाकर हमने क्या देखा ?
घर में जाकर हमने अपनी मम्मी को चाट बनाते देखा
चाट तो हमने खूब खाई पर पत्ते चाटने भूल गये
घर से बस्ता लेकर निकले स्कूल का रस्ता भूल गये
स्कूल में जाकर हमने क्या देखा ?
स्कूल में जाकर हमने मास्टर जी को डंडे मारते देखा
डंडे तो हमने खूब खाये पर रोना धोना भूल गये
स्कूल से बस्ता लेकर निकले घर का रस्ता भूल गये
घर में आकर हमने क्या देखा ?
घर में आकर हमने अपने बड़े भाई की शादी देखी
शादी तो हमने खूब की पर भाभी लाना भूल गये

आलोक गोयल
(७५) पी०सी०ई०बी०

———

चुटकुला

एक चोर चोरी करते हुए पकड़े जाने पर अदालत पहुँचा। जज ने उठकर कहा—'तुम्हें चोरी करते हुए शर्म नहीं आती। तुम आज दूसरी बार अदालत आए हो।' चोर ने हंसकर कहा—'हुजूर मैं तो सिर्फ दो ही बार अदालत आया हूँ, पर आप तो रोज ही आते हैं।'

संजीव जवाहर (६६) पी०सी०ई० 'ए'

चिड़िया घर की सैर

इस बार जब मैं छुट्टियों में घर गया तो हमने निश्चय किया कि चिड़िया घर की सैर की जाये। रविवार को सभी की छुट्टी थी। हम सब सुबह नाश्ता करके चिड़िया घर की ओर चले। हमने यह भी निश्चय किया था कि चिड़िया घर में हम पिकनिक भी मनायेंगे।

हम लखनऊ का चिड़िया घर देखने जा रहे थे। उसका नाम बनारसी बाग है। हमने वहाँ पहुँचते ही पहले टिकट लिये, और अन्दर पहुंचे। सामने हमने हाथियों का एक झुन्ड देखा। वे हमें देखते ही बाढ़ के पास चलने लगे। हमने उन्हें गन्डेरी खाने को दी।

एक स्थान पर अनेक बन्दर कूद रहे थे। हमने उन्हें मूंगफली चने खिलाये, तो वे बड़े प्रसन्न हुए। हम बहुत देर तक इन्हें देखते रहे। आगे शेरों की गुफायें थीं। कुछ शेर दहाड़ रहे थे, कुछ गहरी नींद में सोए थे। एक शेरनी के पास उसके छोटे बच्चे खेल रहे थे।

आगे हमने जिराफ़ देखे। उनकी लम्बी-लम्बी गरदनें जाली के ऊपर निकल रही थीं। वे डरते नहीं थे। ऐसा लगता था कि वे हमारे सिर के बाल छू लेगें। आगे हमने कंगारू देखे। वे अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ खेल रहे थे।

थोड़ी ही दूर पर हमने भालुओं को इधर-उधर घूमते देखा।

थोड़ी दूर चलने पर हमने एक बहुत बड़ा सा पिंजरा देखा। उसमें बहुत तरह के रंग बिरंगे पक्षी थे। उसमें हमने तोता, शुतुरमुर्ग, कोयल, काकातुआ, पपीहा आदि पक्षी देखे। उसमें मोर भी थे। वे नाच रहे थे।

हम बहुत थक गये थे। हमने एक जगह बैठ कर विश्राम किया। दोपहर का भोजन करके हम घर वापिस लौट आये। यह दिन हमारा बहुत ही आनन्द से बीता था।

संदीप अग्रवाल (४१५) यू०आर०ए०

चाय

चाय ज्यादा भारत, चीन और अफ्रीका में उगती है। इन जगहों में वर्षा और धूप बहुत होती है। चाय के लिए केवल वर्षा ही नहीं चाहिए। धूप भी काफी होनी चाहिए। अगर यह दोनों चीजें नहीं होगी तो चाय अच्छी तरह से उग नहीं सकेगी।

अब हम आपको समझाते हैं कि चाय कैसे उगती है। पौलाथीन के थैले में मिट्टी भर कर बीज उसके अन्दर डाल देते हैं। जहाँ यह बीज रखते हैं। उसको वी०पी० (Varaition Plants) कहते हैं।

जब अंकुर कुछ बड़े हो जाते हैं तब वह निकाल कर डिसइनफैकटिड मिट्टी (Disinfected Soil) में गाड़ देते हैं। जब वह बड़े हो जाते हैं (Fullgrown) तो उसकी छोटी पत्तियाँ तोड़ (Pluck) लेते हैं। पत्तियाँ तब तक तोड़ते रहते हैं जब तक पूरा बगान समाप्त न हो जाए। फिर उन छोटी पत्तियों को फैक्ट्री (Factory) में ले जाते हैं। वहाँ पत्तियों को काटने की मशीन (Cutting Machine) में डालते हैं। जब वे कट जाते हैं तो उनको पानी में डाल देते हैं। वहाँ से वे सूखने के लिए भेजी जाती हैं। सूखाने की मशीन होती है। इस मशीन को उबालने की मशीन (Heating Mechine) कहते हैं। उनको सूखने के बाद फाईरिंग मशीन (Firing) में डालते हैं। वहाँ से ये काली चाय होकर निकलती है। जब यह काली हो जाती है इसे छानने की मशीन में डालते हैं।

जब यह छन कर निकलती है तो इसको पैक (Pack) करके कलकत्ता और विदेशों में भेज देते हैं।

जब शीत ऋतु आजाती है तो हम बगान को प्रून (Prune) और स्किफ (Skiff) करते हैं। इसका मतलब होता है कि सारी पुरानी पत्तियों को काट कर फैंक देते हैं। इस समय हम बगान की सफाई भी करते हैं।

चाय बगान का जीवन बहुत मजेदार होता है।

चाय बगान में चावल (Rice) और थैच (Thatch) भी उगता है।

रोहित (२५४) सी०ई०ए०

———

चुटकुले

एक सरदारजी को दिल्ली जाना था। उनकी रेलगाड़ी जब आगरा पहुँची तो उन्होंने रेडियो लगाया। रेडियो में से आवाज आयी यह दिल्ली स्टेशन है। वह आगरा को दिल्ली समझकर उतर गये। उन्होंने रिक्शा वाले से कहा, 'मुझे चाँदनी चौक जाना है।' रिक्शा वाला हैरान हो गया। कहाँ आगरा और कहाँ दिल्ली। अन्त में एक रिक्शा वाला उन्हें ले जाने के लिए तैयार हुआ। वह उन्हें रात-दिन इधर-उधर घुमाता रहा। दूसरे दिन सुबह को उन्हें एक दूसरे सरदारजी मिले। उन्होंने उनसे पूछा, 'चांदनी चौक कहाँ है ?' उन्होंने कहा —'आप क्या कह रहे हैं, मैं तो उसे चार दिन से ढूंढ रहा हूँ।'

गुरमीतसिंह, पी०सी०ई० 'ए'

* * *

एक बार दो शराबी रात को खूब शराब पीकर सड़क पर बातें करते हुए जा रहे थे। इतने में एक शराबी नाले में गिर गया। बड़ा मुश्किल से दूसरे ने उसे बाहर निकाला।

बाहर आते ही पहले शराबी ने कहा 'ये नगरपालिका वाले भी बड़े बदमाश हैं। रात को नाला बीच में कर देते हैं तथा दिन में किनारे को।'

* * *

एक अध्यापक ने बच्चों को कुछ सवाल करने को दिये। सब बच्चों ने तो सवाल सही-सही करके छुट्टी पा ली परन्तु एक लड़के से आखिरी सवाल न हो सका। अतः वह वहीं बैठकर उस सवाल को दोबारा करने लगा। अन्त में उसने अध्यापक को अपनी कापी दिखाई।

'अभी भी पाँच पैसे की कमी है,' अध्यापक ने कहा।

लड़के ने झट जेब से एक पाँच पैसे का सिक्का निकाल कर अध्यापक को दे दिया और कहा, 'मास्टर जी, अब तो जाने दो।'

अरविन्द अग्रवाल (७३) पी०सी०ई० 'ए'

———